हिन्दुस्तान की

www.livehindustan.com
26 अगस्त, 2020 | वर्ष 09, अंक 34
आज हिन्दुस्तान अंक के साथ नई दिशाएं मुफ्त पाएं

नई दिशाएं

कवर स्टोरी

डिस्टेंस एजुकेशन

यानी सुकून की डिग्री

एजुकेशनल न्यूज

अब बदलेंगी परीक्षाएं!

तैयारी

दिल्ली पुलिस कॉन्स्टेबल

नई दिशाएं

COVER STORY

डिस्टेंस एजुकेशन पर यह लेख क्यों पढ़ें

पेज 04

आज के मौजूदा हालात में डिस्टेंस एजुकेशन का महत्व खासा बढ़ गया है। नियमित क्लासेज की जगह ऑनलाइन स्टडी ने ले ली है। ऐसे में पारंपरिक डिस्टेंस एजुकेशन कोर्स आपको आगे बढ़ा सकते हैं।

ऑनलाइन कोर्स : सीखें कैसे करते हैं डेटा एनालिसिस पेज 06

ऑफबीट करियर : नेटवर्किंग से जोड़ें करियर के तार पेज 07

मौके : मोरारजी देसाई योग संस्थान में मौके पेज 08

कामयाबी की कहानी : अनन्या कम्बोज पेज 09

इंस्टीट्यूट वॉच : विदेशी भाषाओं की पढ़ाई के लिए प्रमुख केन्द्र पेज 10

तैयारी : दिल्ली पुलिस कॉन्स्टेबल पेज 12

पर्सनेलिटी ग्रूमिंग : रट कर नहीं प्रैक्टिकल होकर मिलेगी कामयाबी पेज 13

न्यू ट्रेंड्स : सोशल मीडिया मार्केटिंग पेज 14

मुद्रक तथा प्रकाशक राजीव बेओतरा द्वारा हिन्दुस्तान मीडिया वेन्चर्स लिमिटेड (एच एम वी एल) के पक्ष में एच टी मीडिया लिमिटेड प्रेस, प्लॉट नं.-8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा, जिला : गौतमबुद्ध नगर (उ.प्र.) से मुद्रित एवं 18-20, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित।
प्रधान सम्पादक : शशि शेखर
कार्यकारी सम्पादक : जयंती रंगनाथन

दूरभाष : (011) 23361234, (0612) 2223434 सम्पादकीय : (011) 66561364, 66561263
प्रसार : (011) 66561111
विज्ञापन : (011) 66561442, 66561189
फैक्स : (011) 66561451, 66561270
आर.एन.आई. नं. BIHHIN/2012/48999

फोन की स्पीड कैसे बढ़ाएं

अगर आप अपने फोन के सुस्त होने से परेशान हो गए हैं तो आपको इसका हल जल्दी ढूंढ़ना होगा क्योंकि इन दिनों सारा कामकाज फोन के जरिये हो रहा है। इसके लिए कुछ आसान से उपाय हैं, जिन्हें आजमा कर आप अपने फोन को पूरी तरह नये जैसा बना सकते हैं।

हम सभी के साथ कभी न कभी ऐसा होता है कि फोन पर जरूरी काम करने में व्यस्त हैं और अचानक फोन हैंग होना शुरू हो जाता है। जो काम कर रहे हैं, वह बहुत महत्वपूर्ण है। ऐसे में कई बाद दिमाग काम नहीं करता। जरूरी मीटिंग्स या फोन कॉल्स मिस हो जाती हैं क्योंकि फोन हैंग करने लगता है। यह स्थिति कई बार तो 10-15 मिनट या उससे भी ज्यादा देर तक बनी रहती है, जब तक कि हम फोन को री-स्टार्ट नहीं कर लेते।

जानते हैं कैसे बनाएं सुस्त फोन को चुस्त-

- अपने फोन को एक बार फिर से सही ढंग से रिफ्रेश करने के लिए आपको सबसे पहले क्लीन मास्टर का इस्तेमाल करना चाहिए।
- इसके लिए फोन की होम स्क्रीन पर जाएं।
- ऐसा करने के लिए आपको फोन के सेंट्रल बटन पर क्लिक करना होगा।
- अब आपको मेन्यू बटन पर क्लिक करना होगा।
- इसके बाद क्लीन मास्टर एप पर जाना होगा।
- यहां आपको मेमरी बूस्ट विकल्प पर जाकर क्लिक करना होगा।
- जैसे ही आप ऐसा करेंगे, आपका फोन एक बार फिर से उसी तरह काम करने के लिए तैयार हो जाएगा, जैसे वह उस समय करता था, जब आपने इसे नया-नया खरीदा था।

कमाल है स्वदेशी टेक्नोलॉजी

भारत में कई उम्दा टेक्नोलॉजी विकसित हुई हैं, जिन्होंने देश का स्वरूप बदलने में अहम भूमिका निभाई है। जानें कुछ ऐसी ही टेक्नोलॉजीज के बारे में

थोरियम आधारित परमाणु रिएक्टर

सेंट्रल इलेक्ट्रिसिटी अथॉरिटी की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में सिर्फ दो प्रतिशत इलेक्ट्रिसिटी ही न्यूक्लियर पावर से उत्पादित की जा रही थी। यह अन्य देशों की तुलना में बहुत कम थी। इस वजह से थोरियम आधारित परमाणु रिएक्टर भारत में लाया गया।

सामान्य दवाइयां

यूएस, यूरोपियन देशों की फॉर्मास्युटिकल कंपनियों की तरह भारत पूरी दुनिया के लिए सामान्य दवाइयां उत्पादित करता है, क्योंकि यहां बनने वाली दवाइयों की लागत अन्य देशों की तुलना में काफी कम होती है। इसी वजह से यूएस और यूरोप भारतीय दवाइयों की बढ़ती सेल रोकने का प्रयत्न कर रहे हैं, लेकिन अब तक कोई भी देश इसमें सफल नहीं हो पाया है।

प्लास्टिक सड़कें

सेंट्रल पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड के सर्वे के अनुसार, देश के 60 से भी अधिक शहरों से प्रतिदिन 15,000 टन खराब या बेकार प्लास्टिक निकलता है, जिसमें से 6000 टन से भी अधिक प्लास्टिक जमा नहीं किया जाता। ये इधर-उधर सड़कों, नदियों-नालों में पड़े रहकर सिर्फ पॉल्यूशन को बढ़ाता है। लेकिन अब भारत ने ऐसी तकनीक ईजाद की है, जिससे इस बेकार प्लास्टिक को छोटे टुकड़ों में बांट कर, टार में मिला कर उसका इस्तेमाल लंबे समय तक चलने वाली सड़कों और हाईवे को बनाने में किया जा सकेगा।

भारतीय नौसेना

भारतीय नौसेना में इस्तेमाल होने वाले फाइटर प्लेन्स और पनडुब्बियों का निर्माण ज्यादातर भारत में ही किया गया है।

डिस्टेंस एजुकेशन

यानी सुकून की डिग्री

आज के मौजूदा हालात में डिस्टेंस एजुकेशन का महत्व खासा बढ़ गया है। नियमित क्लासेज की जगह ऑनलाइन स्टडी ने ले ली है। ऐसे में पारंपरिक डिस्टेंस एजुकेशन कोर्स आपको आगे बढ़ा सकते हैं। यहां से मिलने वाली डिग्री नियमित पढ़ाई की तरह ही होती है। भारत जैसे देशों में, जहां आज भी बहुत सारे जिलों में कॉलेज या यूनिवर्सिटी नहीं हैं, वहां डिस्टेंस एजुकेशन का माध्यम खासा लोकप्रिय हो रहा है।

डिस्टेंस एजुकेशन या दूरस्थ शिक्षा की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें इंटरनेट की मदद से कहीं भी और कभी भी पढ़ाई की जा सकती है। शिक्षा के इस माध्यम में छात्रों के पास समय की बाध्यता नहीं होती, यानी वे नौकरी या किसी भी अन्य कार्य के साथ कोर्स भी कर सकते हैं। वे ऑनलाइन कक्षाएं कभी भी कर सकते हैं। ऑनलाइन परीक्षाएं दे सकते हैं और साथ ही ग्रुप डिस्कशन में भाग ले सकते हैं। इसकी फीस भी सामान्य संस्थानों के मुकाबले अमूमन कम होती है, क्योंकि इसमें शैक्षणिक संस्थानों को बुनियादी ढांचे पर खर्च नहीं करना पड़ता। इसमें छात्र अपने हिसाब से पढ़ाई कर सकते हैं। यानी कोर्स पूरा करने के लिए उन्हें शिक्षकों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।

दूरस्थ शिक्षा केंद्रों में डिप्लोमा, बैचलर डिग्री, पीजी और मैनेजमेंट के कोर्स चलाए जाते हैं। कई केंद्र प्रोफेशनल कोर्स भी संचालित करते हैं, जो रोजगारोन्मुख होते हैं। इन कोर्स में जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन, लाइब्रेरी साइंस, कंप्यूटर कोर्स आदि शामिल हैं। दूरस्थ शिक्षा की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें उम्र की कोई बाधा नहीं होती। अगर आपकी पढ़ाई किसी कारणवश बीच में ही छूट गई है तो आप इसकी मदद से घर बैठे पढ़ाई के अपने सपने को पूरा कर सकते हैं।

कैसे मिलता है दाखिला

दूरस्थ शिक्षा मुहैया कराने वाले ज्यादातर शैक्षणिक संस्थानों में दाखिला लेने की कोई अंतिम समय-सीमा नहीं होती। लिहाजा आप अपनी जरूरत के अनुसार एकेडमिक सत्र के किसी भी महीने में दाखिला लेने के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

आप जिस इंस्टीट्यूट या ओपन यूनिवर्सिटी में आवेदन करना चाहते हैं, उसकी वेबसाइट पर ऑनलाइन फॉर्म भरकर सभी दस्तावेज अपलोड करें। इसके बाद आपको ऑनलाइन साक्षात्कार देना होगा। इंटरव्यू का नतीजा सही रहने पर आपका दाखिला हो जाएगा। ज्यादातर कोर्स में दाखिले के लिए 12वीं पास होना अनिवार्य होता है। ये संस्थान नियमों के मामले में भी लचीले होते हैं। यहां कोर्स की फीस भी कम होती है। एकेडमिक जानकारियों के लिए इन संस्थानों के कोर्स को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

एक्सपर्ट्स व्यू

आपकी ऑनलाइन डिग्री मान्य होगी या नहीं, यह डिग्री देने वाले संस्थान, डिग्री के स्तर, पढ़ाई के क्षेत्र, इंडस्ट्री, व्यक्तिगत हायरिंग मैनेजर और आप पर निर्भर करती है। किसी भी मान्यता प्राप्त संस्थान के किसी कोर्स में दाखिला लेने से पहले यह जरूर जान लें कि उस कोर्स को यूजीसी से मान्यता हासिल है या नहीं। दूर शिक्षा पेशेवर लोगों के लिए अपने कौशल को अपग्रेड करने का बेहद अच्छा माध्यम है। पेशेवरों को दूर शिक्षा की मदद से कौशल वाले कोर्स करने चाहिए ताकि उनकी योग्यता और कार्यक्षमता में बढ़ोतरी हो।

अशोक सिंह, करियर काउंसलर

तीन प्रकार के दूरस्थ शिक्षा संस्थान

हमारे देश में दूरस्थ शिक्षा उपलब्ध कराने वाले शैक्षणिक संस्थान तीन प्रकार के होते हैं-

- **ओपन यूनिवर्सिटी (केंद्र और राज्य सरकार) :** ये यूनिवर्सिटी सरकार द्वारा सिर्फ दूरस्थ शिक्षा मुहैया कराने के लिए ही स्थापित की गई हैं। मौजूदा समय में हमारे देश में एक नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी है। जबकि 13 स्टेट ओपन यूनिवर्सिटीज हैं, जैसे- इग्नू, डॉ. बी.आर. आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, यशवंतराव महाराष्ट्र ओपन यूनिवर्सिटी आदि।
- **डुअल मोड यूनिवर्सिटी :** ये यूनिवर्सिटी नियमित कोर्स के साथ-साथ दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम भी मुहैया कराती हैं। डीयू, अन्नामलाई यूनिवर्सिटी, आईसीएफएआई यूनिवर्सिटी आदि इसी प्रकार की यूनिवर्सिटी हैं।
- **स्टैंड अलोन यूनिवर्सिटी :** इस प्रकार के संस्थान खास तरह के डिप्लोमा और सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम मुहैया कराते हैं। इनका डीईसी से मान्यता प्राप्त होना जरूरी है। ये संस्थान डिग्री नहीं दे सकते। ऐसा करने के लिए इन्हें किसी यूनिवर्सिटी से टाइअप करना जरूरी है।

क्लासेज

दूरस्थ शिक्षा में पारंपरिक रूप से छात्रों को पाठ्य सामग्री डाक के माध्यम से भेजी जाती थी और वे पढ़ाई करने के बाद समय-समय पर होने वाली परीक्षाएं देते थे, लेकिन डिजिटलाइजेशन के बाद ऑनलाइन कक्षाएं भी करवाई जाती हैं। अब छात्र जब चाहें, इंटरनेट की मदद से इन ऑनलाइन कक्षाओं में शामिल होकर पढ़ाई कर सकते हैं। कई दूरस्थ शिक्षा संस्थान सप्ताहांत में कक्षाओं का आयोजन करते हैं, जिससे कामकाजी लोगों को सहूलियत होती है। ये संस्थान ई-क्लास से लेकर छोटी अवधि वाली नियमित कक्षाएं तक चला रहे हैं।

इन बातों का रखें ध्यान

अगर आप किसी भी संस्थान के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम में दाखिला लेने की इच्छा रखते हैं, तो आवेदन करने से पूर्व यह जरूर जांच लें कि आपका कोर्स विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के डिस्टेंस एजुकेशन ब्यूरो (डीईबी) से मान्यता प्राप्त हो। डीईबी से मान्यता प्राप्त संस्थानों की सूची इसकी वेबसाइट पर आसानी से देखी जा सकती है। जो कोर्स या संस्थान मान्यता प्राप्त नहीं हैं, उनमें आवेदन न करें।

कोर्सेज

डिस्टेंस यूजी कोर्स

बीए	बीकॉम
बीएससी	बीबीए
बीसीए	बीएससी आईटी

डिस्टेंस पीजी कोर्स

एमकॉम	एमए
एमएससी	बीएड
एमबीए	एमसीए

एमएससी आईटी

मास्टर इन इंटीरियर डिजाइन
मास्टर इन फैशन मैनेजमेंट एंड डिजाइन
मास्टर ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन

डुअल डिग्री कोर्स

एग्जिक्यूटिव डिप्लोमा इन इंटरनेशनल बिजनेस मैनेजमेंट + एमबीए
एक्सटेंडेड डिप्लोमा इन स्ट्रैटेजिक मैनेजमेंट एंड लीडरशिप + एमबीए

पीजी डिप्लोमा कोर्स

पीजी डिप्लोमा इन बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन
पीजी डिप्लोमा इन कंप्यूटर एप्लिकेशन
पीजी डिप्लोमा इन इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी
पीजी डिप्लोमा इन जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन

प्रमुख संस्थान

- इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी www.ignou.ac.in
- अन्नामलाई यूनिवर्सिटी www.annamalaiuniversity.ac.in
- सिक्किम मणिपाल यूनिवर्सिटी www.smu.edu.in
- सिंबॉयसिस सेंटर ऑफ डिस्टेंस लर्निंग http://www.scdl.net
- पंजाब टेक्निकल यूनिवर्सिटी www.ptu.ac.in
- दिल्ली यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग www.sol.du.ac.in
- आईएमटी डिस्टेंस एंड ओपन लर्निंग इंस्टीट्यूट www.imtcdl.ac.in
- विवेकानंद ग्लोबल यूनिवर्सिटी www.vgu.ac.in
- यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र ओपन यूनिवर्सिटी www.ycmou.ac.in
- डॉ. बी.आर. आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी www.braou.ac.in

दूरस्थ शिक्षा की विशेषताएं

- किसी संस्थान में जाकर पढ़ाई नहीं करनी होती।
- विजुअल क्लासरूम लर्निंग, इंटरेक्टिव ऑनसाइट लर्निंग और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये छात्र देश के किसी भी राज्य में रहकर अपने समय के अनुसार, घर बैठे पढ़ाई कर सकते हैं।
- दूर शिक्षा के जरिये पढ़ाई करने की फीस काफी नियमित कॉलेजों के मुकाबले काफी कम है।

संजीव कुमार

सीखें कैसे करते हैं डेटा एनालिसिस

दुनिया की तमाम योजनाओं के कार्यान्वयन में आंकड़ों की भूमिका अहम होती है। यदि डेटा न हो तो कोई भी व्यक्ति या संस्थान न तो सही ढंग से चल सकता है और न ही सही परिणाम ला सकता है। आप डेटा एनालिसिस का ऑनलाइन कोर्स कर सकते हैं। जानते हैं कैसे-

आज के समय में लोग आंकड़ों को अधिक तवज्जो देने लगे हैं और इसका सटीक विश्लेषण करने वाले लोग संस्थान को आगे ले जाने में मदद करते हैं। जिस तरह पूरी दुनिया में वैश्विक वातावरण बन रहा है, ऐसे में किसी भी कंपनी से लेकर सरकार तक की भावी योजनाओं के अमल में डेटा एनालिस्ट की भूमिका काफी बढ़ गई है। डेटा एनालिस्ट का काम सिर्फ आंकड़ों का विश्लेषण करना ही नहीं होता, बल्कि पुराने आंकड़ों और नए आंकड़ों की भी समीक्षा करना होता है कि किस स्थिति में किस-किस तरह का नुकसान या फायदा हुआ।

डेटा एनालिस्ट की मांग सिर्फ भारत में ही नहीं है, बल्कि दुनिया भर में इसके विशेषज्ञों की मांग है, जिनसे हर कोई अपने आंकड़ों का सटीक विश्लेषण प्राप्त करना चाहता है। यही कारण है कि माइक्रोसॉफ्ट ने 'एप्लाइड डेटा एनालिसिसः वर्किंग इन ऑर्गेनाइजेशन्स एंड इंडस्ट्रीज' नामक कोर्स तैयार किया है। इस कोर्स को दुनिया भर के छात्र ऑनलाइन कोर्स संचालित करने वाले प्लैटफॉर्म 'ईडीएक्स' के जरिये कर सकते हैं। इस कोर्स के दौरान छात्रों को संस्थानिक और इंडस्ट्री स्पेसिफिक हैंड-ऑन प्रैक्टिस का अनुभव प्राप्त होगा। यह कोर्स विद्यार्थियों को विभिन्न तरह के एप्लाइड डेटा के अन्वेषण करने वाले की भूमिका को समझने में मदद करेगा, जिससे वे एक बेहतर एनालिस्ट बन सकें। गौरतलब है कि डेटा एनालिसिस से जुड़ी मूल बातें प्रत्येक संस्थान और उद्योग में एक समान ही रहती हैं, लेकिन उनके विश्लेषण करने का तरीका अलग-अलग होता है।

कोर्स
एप्लाइड डेटा एनालिसिसः वर्किंग इन ऑर्गेनाइजेशन्स एंड इंडस्ट्रीज

कोर्स की फीस
मुफ्त

अवधि
छह हफ्ते

अधिक जानकारी के लिए क्लिक करें
https://bit.ly/2Eupmly

क्या सीखेंगे छात्र

इस कोर्स के तहत छात्रों को यह जानने का मौका मिलेगा कि किसी भी संस्थान में डेटा की उपयोगिता क्या होती है। किसी खास संस्थान में किस तरह के खास डेटा की जरूरत होती है? क्या-क्या प्रैक्टिस कॉमन डेटा एनालिस्ट टेक्नीक आज मौजूद हैं और इनका उपयोग किस तरह से किया जाता है? इस कोर्स के दौरान विभिन्न तरह के डेटा के साथ काम कैसे किया जाता है, यह भी बताया जाएगा। जहां कहीं भी डेटा की समस्या उत्पन्न होती है, वहां कैसे डेटा एनालिस्ट की आवश्यकता होती है, इसके बारे में भी छात्र जानकारी प्राप्त करेंगे। डेटा एनालिस्ट के क्षेत्र में किस तरह की नौकरियां मिलती हैं, इस बारे में भी छात्र अवगत होंगे।

क्या है सिलेबस

इस कोर्स को छह मॉड्यूल में बांटा गया है। इसके तहत पहले मॉड्यूल में डेटा एनालिसिस इन कॉन्टेक्स्ट, दूसरे मॉड्यूल में डेटा एनालिसिस फॉर बिजनेस, तीसरे मॉड्यूल में डेटा एनालिसिस फॉर एजुकेशन, चौथे मॉड्यूल में डेटा एनालिसिस फॉर हेल्थकेयर, पांचवे मॉड्यूल में डेटा एनालिसिस फॉर गवर्नमेंट और छठे मॉड्यूल में करियर फॉर डेटा एनालिस्ट की पढ़ाई छात्र करेंगे। हर मॉड्यूल के बाद छात्रों को संबंधित प्रश्न या क्विज का उत्तर भी देना होगा। कोर्स के आखिर में छात्रों को फाइनल असाइनमेंट भी जमा करना होगा।

कैसे होगी पढ़ाई

यह कोर्स कुल छह हफ्ते का है। इस कोर्स को हर हफ्ते दो से चार घंटे पढ़ाई करने से पूरा किया जा सकता है। सभी छात्रों को परीक्षा के साथ-साथ फाइनल प्रोजेक्ट भी पूरा करना होगा और प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए करीब 7,000 रुपये की फीस चुकानी होगी। हालांकि सिर्फ कोर्स को करने के लिए छात्रों को कोई फीस नहीं चुकानी होगी। कोर्स की पढ़ाई पूरी तरह इंग्लिश में होगी।

इस कोर्स को करने वाले छात्रों में बेसिक एक्सेल प्रोफिशिएन्सी, फंडामेंटल मैथ्स और स्टैटिस्टिक्स बैकग्राउंड के साथ-साथ डेटा विजुलाइजेशन फ्लूएंसी होनी चाहिए। यह कोर्स उन छात्रों के लिए काफी फायदेमंद है, जो बतौर डेटा एनालिस्ट करियर बनाना चाहते हैं। यह कोर्स इंट्रोडक्टरी स्तर का है। इसे करने के लिए छात्रों के पास डेस्कटॉप एक्सेल होना चाहिए और इसके लिए विंडो, मैक ओएस आदि के जरिये कंप्यूटर चल रहा हो।

फीचर टीम

नेटवर्किंग से जोड़ें करियर के तार

सूचना प्रौद्योगिकी एक ऐसा क्षेत्र है, जहां बहुत ही कम समय के अंतराल पर बहुत सारे तकनीकी एडवांसमेंट होते हैं। नयी तकनीकें आने के साथ ही कंपनियां ऐसे पेशेवरों की तलाश करती हैं, जो इनकी जानकारी रखते हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार, इसे इस परिदृश्य में देखा जा सकता है कि इन नई तकनीकों की जानकारी रखने वाले लोगों की मांग ज्यादा होगी और आपूर्ति कम।

जानें क्या है नेटवर्किंग

नेटवर्किंग दो या उससे ज्यादा कंप्यूटर को जोड़ने और फिर संसाधनों को साझा कर सकने की प्रक्रिया को कहा जाता है। नेटवर्किंग के कुछ ऐसे एप्लिकेशन, जहां उन्होंने कार्य की प्रकृति को बदल दिया है, उनमें घर से कम करना (वर्क फ्रॉम होम), वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और सूचनाएं जुटाना यानी इंफॉर्मेशन गैदरिंग है।

उपलब्ध कोर्स और सर्टिफिकेशन

इस क्षेत्र की व्यापकता को देखते हुए कई स्तर पर कोर्स कराए जाते हैं, जैसे सर्टिफिकेशन, अंतरराष्ट्रीय सर्टिफिकेशन, डिप्लोमा और डिग्री स्तर के कोर्स। ज्यादातर विश्वविद्यालय कंप्यूटर नेटवर्किंग के लिए डिग्री प्रोग्राम उपलब्ध करा रहे हैं। ये डिग्री कोर्स बीटेक के रूप में उपलब्ध हैं। कुछ संस्थान केवल नेटवर्किंग पर केंद्रित शॉर्ट टर्म कोर्स ही करा रहे हैं, जहां से सर्टिफिकेट या डिप्लोमा कोर्स किया जा सकता है।

कैसे मिलेगा प्रवेश

कंप्यूटर नेटवर्किंग के कोर्स में 12वीं पास करने के बाद प्रवेश लिया जा सकता है। साइंस बैकग्राउंड होने से कोर्स को ज्यादा बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। इंग्लिश की अच्छी जानकारी होने पर बेहतर संभावनाएं सामने आ सकती हैं।

प्रोग्राम

लाइनक्स : यह एक अंतरराष्ट्रीय सर्टिफिकेशन कोर्स है और एलएएन एडमिनिस्ट्रेशन के लिए सबसे लोकप्रिय कोर्स में से एक है। इसमें विभिन्न मॉड्यूल होते हैं, जिनके तहत जूनियर से लेकर सीनियर स्तर के कोर्स होते हैं।

सिस्को सर्टिफिकेशन्स : आईटी इंडस्ट्री के नेटवर्किंग क्षेत्र का यह एक और लोकप्रिय सर्टिफिकेशन है। सीसीएनए, सीसीएनपी और सीसीआईई सिस्को के सबसे ज्यादा किए जाने वाले सर्टिफिकेशन हैं।

नेटवर्किंग में करियर के दो रास्ते

- आईआईएस, आईआईटी, एनआईटी आदि से कंप्यूटर नेटवर्किंग में पोस्ट ग्रेजुएशन कर स्पेशलाइजेशन कर सकते हैं। पीजी पूरी करने के बाद आपको नेटवर्किंग क्षेत्र की दिग्गज कंपनियों सिस्को, ऑरेंज, आदि में काम करने का मौका मिल सकता है।
- इस क्षेत्र में प्रवेश का दूसरा तरीका है कि आप सीसीएनए, सीसीएनपी, सिस्को ट्रैक, जेएनसीआईपी और जेएनसीआईई जैसे वेंडर सर्टिफिकेशन हासिल कर लें। इस तरीके का पालन कर आप छोटे से लेकर बड़े आकार तक के नेटवर्क को डिजाइन, इंस्टॉल और कन्फिगर कर सकते हैं। नेटवर्किंग क्षेत्र में प्रवेश का यह अच्छा विकल्प है और ज्यादातर लोग यही रास्ता अख्तियार करते हैं।

स्किल

तकनीक बहुत तेजी से बदलती है। जो आज के लिए नई है, वह कल पुरानी हो जाएगी। नया वर्जन कुछ ही दिनों में नए स्पेसिफिकेशन के साथ बाजार में आ जाएगा। इसलिए कंप्यूटर नेटवर्किंग पेशेवरों के लिए जरूरी है कि वह नई तकनीकों से अपडेट रहें। साथ ही संवाद कौशल भी अच्छा होना चाहिए।

फीचर टीम

प्रमुख संस्थान

- दिल्ली यूनिवर्सिटी
  वेबसाइट-www.du.ac.in
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
  वेबसाइट-www.ignou.ac.in
- आंध्र यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग वेबसाइट-andhrauniversity.edu.in
- जामिया मिल्लिया इस्लामिया
  वेबसाइट-http://jmi.ac.in

वेतन

इस क्षेत्र में प्रवेश के साथ युवाओं का शुरुआती वेतन 20 हजार रुपये प्रतिमाह हो सकता है। वहीं अनुभव प्राप्त करने के साथ ही तनख्वाह एक लाख रुपये प्रति महीने तक आसानी से पहुंच सकती है। इस कोर्स के बाद आप छोटी से लेकर बड़ी से बड़ी कंपनी तक में काम कर सकते हैं।

एक्सपर्ट्स व्यू

पारंपरिक नेटवर्किंग में संभावनाएं अब बहुत ज्यादा नहीं हैं, विशेष तौर पर आईटी क्षेत्र में। केवल वे क्षेत्र, जहां अब भी बहुत उन्नत तकनीक का इस्तेमाल नहीं होता, वहीं परंपरागत नेटवर्किंग में संभावनाएं हैं। अब नेटवर्किंग करने की चाह रखने वाले युवाओं को डिबॉक्स, ऑटोमेशन और स्क्रिप्टिंग की जानकारी भी होनी चाहिए, क्योंकि पहले की तरह एक कंप्यूटर को दूसरे कंप्यूटर से इंटरनेट के जरिये जोड़कर काम नहीं होता, बल्कि अब उन्नत तकनीकों के चलते ये सब बहुत आसान हो गया है। इसलिए युवाओं को हर वक्त खुद को अपडेटेड रखने की जरूरत है। नेटवर्किंग की खास बात यह है कि इसे 12वीं पास युवा भी कर सकता है और एम.टेक कर चुका युवा भी इस दिशा में बढ़ सकता है।

मनीष झा, ऑपरेशन्स सपोर्ट इंजीनियर, ओवीएच इंडिया

पद

कंप्यूटर नेटवर्किंग में कई तरह के पेशेवर पद उपलब्ध हैं, जहां हर पद के लिए वेतन अलग है। इस क्षेत्र में मूलतः इन पदों पर काम करने का मौका मिलता है।

- नेटवर्क एडमिनिस्ट्रेटर
- नेटवर्क (सिस्टम्स) इंजीनियर
- नेटवर्क (सर्विस) टेक्नीशियन
- नेटवर्क प्रोग्रामर, एनालिस्ट
- नेटवर्क या इन्फॉर्मेशन सिस्टम्स मैनेजर

इस बार आप पढ़ेंगे कि सच्ची लगन हो तो देर से ही सही कामयाबी जरूर मिलती है। साथ ही ऐसे व्यक्ति के बारे में भी जानेंगे, जो छह साल की उम्र से रिकॉर्ड पर रिकॉर्ड बनाए जा रहे हैं। इसके अलावा उपयोगी वेबसर्च और मोबाइल एप के बारे में भी मिलेगी जानकारी।

तसवीर में खबर

सीनियर सिटिजन टैटू मैन के दिलचस्प वर्ल्ड रिकॉर्ड्स

दिल्ली के रहने वाले प्रकाश ऋषि को शरीर में टैटू बनवाने का शौक है। उन्होंने 366 देशों के झंडे अपने शरीर में गुदवाए हैं। उनके शरीर के हर अंग में टैटू गुदे हैं।

राजधानी दिल्ली में 1942 में जन्मे ऋषि का नाम पहली बार 1990 में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हुआ था। उन्होंने अपने दो दोस्तों के साथ 1,001 घंटे तक स्कूटर की सवारी की थी। बस रिकॉर्ड्स बनाने का उनका शौक 1990 से अब तक जारी है।

गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराने वाले प्रकाश ऋषि को 'टैटू मैन' के नाम से जाना जाता है। 78 वर्षीय टैटू मैन इसके अलावा भी कई अजब-गजब कारनामे कर चुके हैं। प्रकाश ऋषि ने पांच सौ से अधिक स्ट्रॉ मुंह में रखने के लिए अपने सारे दांत निकलवा दिए थे। वहीं इससे पहले वह एक पिज्जा डिलीवर करने के लिए नई दिल्ली से सैन फ्रांसिस्को तक सफर करके भी रिकॉर्ड बना चुके हैं। उनकी पत्नी के नाम भी सबसे छोटी विल बनाने का रिकॉर्ड दर्ज है। यूं कहा जा सकता है इन सीनियर सिटिजन की पूरी जिंदगी अजब-गजब रिकॉर्ड के नाम ही रही है। उनका यह जुनून उन्हें लगातार कुछ नया करने को प्रेरित करता रहता है।

वेबसर्च

Shabdkosh

- हिंदी और अंग्रेजी के ऐसे कई मुश्किल शब्द होते हैं, जिनका अर्थ हमें मालूम नहीं होता। ऐसे ही शब्दों के अर्थों को जानने के लिए शब्दकोश एक अच्छा सर्चपेज है। यह ऑनलाइन हिंदी और अंग्रेजी डिक्शनरी है।
- यह हिंदी के साथ-साथ बांग्ला, गुजराती, कोंकणी, मराठी, पंजाबी आदि भाषाओं में भी उपलब्ध है।
- यह किसी शब्द का अर्थ बताने के साथ ही उसका उच्चारण भी देती है। साथ ही उसके अर्थ को तीन से चार उदाहरण के साथ समझाती है।
- शब्दों के अर्थ के साथ-साथ आप उनके पर्यायवाची और विलोम शब्दों को भी पढ़ सकते हैं। शब्दों को लिखने के लिए इसमें मौजूद वर्चुअल कीबोर्ड की मदद भी आप ले सकते हैं।
- इतना ही नहीं, इसमें ऐसे दिलचस्प गेम भी हैं, जिन्हें खेलकर न सिर्फ आपको ज्ञान मिलता है बल्कि आप अपनी वोकेबलरी भी सुधार सकते हैं।

मोबाइल एप

Studyblue

- छात्रों के लिए छात्रों द्वारा बनाई गई स्टडी लाइब्रेरी है स्टडीब्लू, जहां आपको 400 मिलियन से अधिक फ्लैशकार्ड्स और नोटस पढ़ने के लिए मिल सकते हैं।
- आप चाहे दिल्ली या फिर मुंबई के किसी कॉलेज के छात्र हों, आपको तमाम स्टडी मैटीरियल आराम से इसमें मिलते हैं।
- अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए इसके क्विज भी पढ़ सकते हैं और क्विज कस्टम भी कर सकते हैं।
- आप अपनी प्रोग्रेस ट्रैक कर सकते हैं। अपनी सहूलियत के हिसाब से रिमाइंडर सेट कर सकते हैं। अपनी स्टडी मैटीरियल को ऑडियो और इमेज फॉर्म में इस्तेमाल कर सकते हैं।
- आप निशुल्क किसी भी स्मार्टफोन या डिवाइस के जरिये इससे अपनी पढ़ाई कर सकते हैं। इसका एप गूगल प्ले स्टोर पर भी उपलब्ध है।

मौके

मोरारजी देसाई योग संस्थान में वेकेंसी

- मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, नई दिल्ली ने योग थेरेपिस्ट, रिसर्च असिस्टेंट और अन्य कई पदों पर भर्ती के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किए हैं।
- पात्र और इच्छुक उम्मीदवार 26 अगस्त 2020 तक आवेदन कर दें। यानी आज ही फॉर्म भर दें। प्रारूप की जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइट पर क्लिक करें।
- जूनियर रिसर्च फेलो के लिए सायकोलॉजी/ क्लिनिकल सायकोलॉजी में पोस्ट ग्रेजुएट और रिसर्च असिस्टेंट के लिए विज्ञान या किसी अन्य प्रासंगिक विषय में ग्रेजुएट के साथ अनुसंधान कार्य के क्षेत्र में तीन वर्ष का अनुभव होना जरूरी है।
- उम्मीदवार की आयु आवेदन भरते समय 64 वर्ष से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। हालांकि चयन समिति उपयुक्त पोस्ट के लिए योग्य उम्मीदवार को आयु में कुछ अतिरिक्त छूट दे सकती है।
- अधिक जानकारी के लिए, yogamdniy.nic.in संस्थान की वेबसाइट पर जा सकते हैं।

अंकिता बंगवाल

अनन्या कम्बोज
कामयाबी की कहानी

कम उम्र में लेखन का जज्बा

हर किसी का एक सपना होता है और उसे पूरा करने के लिए लोग तमाम उम्र निकाल देते हैं। लेकिन अनन्या कम्बोज ने सिर्फ 15 साल की उम्र में कई उपलब्धियां हासिल कर ली हैं। 11वीं कक्षा में पढ़ने वाली अनन्या एक लेखिका हैं, जो ब्रिक्स देशों की गुडविल एंबेसडर हैं, और उन्हें इस सितंबर में संयुक्त राष्ट्र के युवा मंच में बोलने के लिए आमंत्रित किया गया है। अनन्या एक युवा पत्रकार के रूप में फुटबॉल फॉर फ्रेंडशिप प्रोग्राम का हिस्सा भी रह चुकी हैं।

- अनन्या ने गर्ल अप, गर्ल्स विद इम्पैक्ट, लीन इन इंडिया, एसडीजी फॉर चिल्ड्रन, एसडीजी चौपाल, वर्ल्ड लिटरेसी फाउंडेशन और मर्सिडीज जैसी कई अन्य सशक्तिकरण परियोजनाओं में भी भाग लिया है। पंजाब की अनन्या अपनी उपलब्धियों के लिए फुटबॉल फॉर फ्रेंडशिप प्रोग्राम को श्रेय देती हैं। 2017 में, जब भारत ने U-17 पुरुष फुटबॉल विश्व कप का आयोजन किया, तो अनन्या ने भारत में फुटबॉल को लोकप्रिय बनाने के लिए भारत सरकार द्वारा प्रचारित एक एआईएफएफ (ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन) कार्यक्रम में लेखन प्रतियोगिता में भाग लिया। अनन्या ने एक लेख लिखा कि फुटबॉल कैसे दोस्ती और वैश्विक रिश्तों को बढ़ावा देता है। उनके निबंध की बदौलत उन्हें सेंट पीट्सबर्ग, रूस में फुटबॉल फॉर फ्रेंडशिप कार्यक्रम के लिए युवा पत्रकार के रूप में चुना गया। फुटबॉल फॉर फ्रेंडशिप कार्यक्रम में अन्य प्रतिनिधियों के साथ बातचीत कर अनन्या ने लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण के मामले में अपनी बात रखी।

जब वह छोटी थीं, तो उन्होंने देखा कि कैसे कुछ खेल प्रशिक्षक इस धारणा को बढ़ावा दे रहे थे कि लड़कियों के लिए खेलकूद सही क्षेत्र नहीं। वह कहती हैं, 'मुझे लगा कि हमें पुरुषों और महिलाओं के बीच इन मतभेदों को खत्म करने की जरूरत है।'

- अनन्या ने अब लड़कियों और महिलाओं को उनके अधिकारों को समझने और लैंगिक असमानता को दूर करने में मदद करने के लिए 'स्पोर्ट्स टू लीड' नाम से अपना कार्यक्रम शुरू किया है।
- अनन्या ने एक किताब भी लिखी है। उनकी किताब 'माई जर्नी फ्रॉम मोहाली टू सेंट पीट्सबर्ग' 21 कहानियों का एक संकलन है, जो उनकी यात्रा के विवरण के साथ ही उन मूल्यों पर आधारित हैं, जो खेल और तमाम कार्यक्रमों ने उन्हें दिए हैं।

नेहा सजवाण

जनरल नॉलेज

हवा कैसे चलती है

- हमारी पृथ्वी, गैस के अणुओं की परतों से घिरी हुई है, जिसे वायुमंडल कहा जाता है।
- यह वायुमंडल मुख्य रूप से नाइट्रोजन और ऑक्सीजन गैसों से मिलकर बना है।
- जब इन गैसों के अणु गति पकड़ते हैं तो उसे हवा कहा जाता है।
- अब सवाल यह है कि हवा चलती कैसे है। सूर्य पृथ्वी की सतह को गर्म करता है, तो इससे वायुमंडल भी गर्म होता है।
- धरती का आकार गोल होने के कारण इस पर हर जगह सूरज की किरणें बराबर नहीं पड़तीं। धरती पर सूरज के सामने रहने वाले भाग में तो किरणें सीधी पड़ती हैं, जिन हिस्सों पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं, वे गर्म हो जाते हैं और जिन हिस्सों पर तिरछी किरणें पड़ती हैं, वे ठंडे रहते हैं।
- अलग-अलग तापमान वाले इन इलाकों से हवा को गति मिलती है। समुद्र के नजदीक भी ऐसा ही होता है, क्योंकि पानी जमीन की तुलना में देर से ठंडा या गर्म होता है।
- पृथ्वी की सतह गर्म होने से हवा भी गर्म हो जाती है।
- गर्म हवा ठंडी हवा की अपेक्षा हल्की होती है, इसलिए ऊपर उठती है और फैलती है। उसकी जगह लेने के लिए ठंडी हवा आ जाती है।

टॉपर्स टिप्स >>

अपनी क्षमता पर रखें भरोसा

विशाखा यादव ने यूपीएससी में 6वीं रैंक हासिल की है। दिल्ली की विशाखा बताती हैं कि उन्होंने इसके लिए तीन साल कड़ी मेहनत की है। वह बताती हैं कि पहली दो बार में उनका प्रीलिमनरी एग्जाम क्लियर नहीं हुआ था। तैयारी को लेकर विशाखा का कहना है कि हर कैंडिडेट की अलग क्षमता होती है। उसे अपनी क्षमता के आधार पर ही तैयारी करनी चाहिए।

विशाखा ने पिछले दो सालों से अपने तमाम सोशल मीडिया अकाउंट्स से दूरी बनाकर रखी थी। वह हर दिन, हर हफ्ते या हर महीने का टारगेट सेट करके पढ़ाई करती थीं। इससे कैंडिडेट की प्लानिंग और विषय की कवरेज सही होती है।

बुक काउंटर >>

डर के आगे जीत है
लेखकः गौरव कृष्ण बंसल

इस किताब में बताया गया है कि सफल तो सभी होना चाहते हैं लेकिन सफलता हासिल करने के लिए किन चुनौतियों का सामना करना होगा, यह जानना जरूरी है। इसमें सफल लोगों के जीवन का उदाहरण दिया गया है, साथ ही लेखन ने अपने अनुभवों का भी इसमें जिक्र किया है। पुस्तक छात्रों के लिए उपयोगी है।

इट ओनली टेक्स वन मिनट यू चेंज योर लाइफ
लेखकः विली जॉली

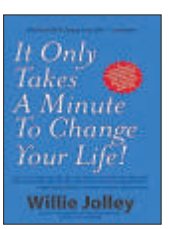

यह पुस्तक बताती है कि एक मिनट में कैसी कोई अपनी जिंदगी बदल सकता है और अपने सपनों को साकार कर सकता है। इस पुस्तक से आप अपने भीतर छिपी शक्तियों को जाग्रत कर सकते हैं और सफलता की राह पर चल सकते हैं।

विदेशी भाषाओं की पढ़ाई के लिए प्रमुख केन्द्र

अंग्रेजी और विदेशी भाषाएं बेहतर करियर की राह खोलती रही हैं, लेकिन जरूरी है कि इसके लिए सही जगह से इन भाषाओं की पढ़ाई की जाए। अगर आप भी अंग्रेजी या विदेशी भाषा में करियर बनाने की चाह रखते हैं, तो हैदराबाद में स्थित ईएफएल यूनिवर्सिटी या जेएनयू का चयन कर सकते हैं।

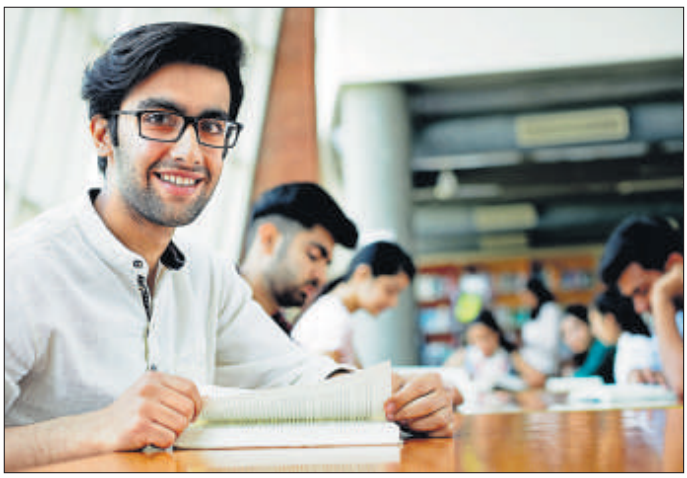

ईएफएलयू

1958 में हैदराबाद में इस संस्थान की स्थापना की गई, जिसका नाम रखा गया सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंग्लिश। 1972 में यहां जर्मन, रशियन और फ्रेंच भाषा की पढ़ाई शुरू की गई और इसका नाम सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंग्लिश एंड फॉरेन लैंग्वेजेज रख दिया गया। 1973 में इसे डीम्ड यूनिवर्सिटी का दर्जा मिला। इसके बाद 1973 में शिलॉन्ग और 1979 में लखनऊ सेंटर की स्थापना की गई, ताकि इन क्षेत्रों के लोग भी इस संस्थान का लाभ उठा पाए। उसके बाद यहां और भी अनेक कोर्स शुरू किए गए। 2006 में इसे सेंट्रल यूनिवर्सिटी का दर्जा मिला और आज इसे इंग्लिश एंड फॉरेन लैंग्वेजेज यूनिवर्सिटी के नाम से जाना जाता है, जिसे अब लोग छोटे नाम ईएफएलयू के नाम से अधिक जानने लगे हैं।

उपलब्ध कोर्स : आज यहां स्नातक, स्नातकोत्तर, पीजी डिप्लोमा और पीएचडी स्तर की पढ़ाई होती है। स्नातक स्तर पर अंग्रेजी ऑनर्स(100), अरेबिक(20), फ्रेंच(20), रशियन(20) और जैपनीज(20) ऑनर्स की पढ़ाई होती है। स्नातक स्तर पर पत्रकारिता और जनसंचार में स्नातक(20) व अंग्रेजी में बीएड(50) की भी पढ़ाई होती है।

स्नातकोत्तर स्तर पर अंग्रेजी(160), हिन्दी(20), अरेबिक(20), फ्रेंच(20), रशियन(20), स्पेनिश(20), जर्मन(20), इंग्लिश लिटरेचर(30, लिंग्विस्टिक्स(20), कंप्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स (20) व पत्रकारिता व जनसंचार(40) में एमए की पढ़ाई की व्यवस्था है। स्नातकोत्तर डिप्लोमा स्तर पर पीजी डिप्लोमा इन टीचिंग ऑफ इंग्लिश (50) की भी पढ़ाई होती है। लिंग्विस्टिक्स एंड फोनेटिक्स(11), एजुकेशन(6), इंग्लिश लैंग्वेज एजुकेशन(16), एस्थेटिक्स एंड फिलॉसफी(8), इंडिया स्टडीज (2), इंडियन एंड वर्ल्ड लिटरेचर(8), फिल्म स्टडीज एंड विजुअल कल्चर(4), हिन्दी(4), कल्चरल स्टडीज(4), इंग्लिश लिटरेचर(2), अरेबिक (8), रशियन(6) और फ्रेंच(6) में पीएचडी कर सकते हैं। इनमें लखनऊ व शिलॉन्ग सेंटर की भी कुछ सीटें शामिल हैं।

कैंपस में है खास : इस संस्थान के तीन कैंपस हैं। मुख्य कैंपस हैदराबाद में है, जो लगभग 37 एकड़ में है। कैंपस में बेहतर शैक्षणिक माहौल है और तमाम जरूरी सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा गया है। शैक्षणिक व शोध कार्यों के लिए कैंपस में रमेश मोहन लाइब्रेरी है, जिसमें पुस्तकों और जर्नल्स का काफी अच्छा संग्रह है। छात्र प्रिंट और डिजिटल, दोनों तरह से इसका भरपूर लाभ उठाते हैं। यहां छात्रों के सहयोग के लिए 1984 में ही मल्टी मीडिया रिसर्च सेंटर स्थापित कर दिया गया, जहां छात्रों के लिए टीवी कार्यक्रम बनाए जाते हैं। यह वैसे तो आवासीय परिसर नहीं है, लेकिन बाहर के छात्र/छात्राओं के लिए यहां हॉस्टल की व्यवस्था है। कैंपस में कुल पांच हॉस्टल हैं, जिनमें से दो विदेशी छात्र/छात्राओं के लिए हैं।

पताः रजिस्ट्रार, द आईएफएल यूनिवर्सिटी, हैदराबाद-500007, (तेलंगाना), वेबसाइट www.efluniversity.ac.in

सत्य सिन्धु

जेएनयू

जेएनयू यानी जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय को उच्च शिक्षा का अन्तरराष्ट्रीय केन्द्र माना जाता है, जहां लगभग तमाम विषयों में उच्च शिक्षा की व्यवस्था है। यहां के स्कूल ऑफ लैंग्वेज, लिटरेचर एंड कल्चरल स्टडीज के तहत अनेक विदेशी भाषाओं की पढ़ाई की व्यवस्था है। इस स्कूल के तहत अलग-अलग भाषाओं के लिए कई सेंटर बनाए गए हैं। यहां अंडर ग्रेजुएट स्तर से लेकर पीएचडी स्तर तक की पढ़ाई की व्यवस्था की गई है।

उपलब्ध कोर्स : यहां से पर्सियन, जैपनीज, अरेबिक, कोरियन, चाइनीज, फ्रेंच, लिंग्विस्टिक्स, जर्मन, इंग्लिश, रशियन, स्पेनिश समेत हिन्दी, उर्दू, कन्नड़ और तमिल की भी पढ़ाई की जा सकती है। यहां अंडरग्रेजुएट कोर्स के तहत पर्सियन, कोरियन, अरेबिक व स्पेनिश भाषा में सीटों की संख्या 39-39 है। जर्मन, रशियन और फ्रेंच में 48-48 सीटों पर छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। चाइनीज में 44 सीटों पर प्रवेश का प्रावधान है। पोस्ट ग्रेजुएट स्तर पर रशियन व अरेबियन में 10-10, पर्सियन में 19, कोरियन में 5, स्पेनिश व जैपनीज में 8-8, चाइनीज में 4 सीटों पर प्रवेश दिया जाता है। एमफिल व पीएचडी स्तर पर सीटों की संख्या में कई बार परिवर्तन होता रहता है।

पताः डिप्टी रजिस्ट्रार(एकेडमिक), जवाहर लाल यूनिवर्सिटी, न्यू महरौली रोड, नई दिल्ली-110067, ईमेल आईडी-dr_acad@mail.jnu.ac.in

वेबसाइटः https://www.jnu.ac.in/

1 जेईई और नीट परीक्षाओं के नियमों में होंगे बदलाव

कोविड-19 के चलते जेईई और नीट परीक्षाओं में देरी हुई। अभिभावकों और छात्रों ने इन्हें फिर से टालने की मांग की और इसे लेकर याचिका भी दायर की, पर सुप्रीम कोर्ट ने इसे खारिज कर दिया है। अब ये परीक्षाएं नियत दिन और समय पर होंगी। हालांकि, महामारी को देखते हुए जेईई और नीट परीक्षाओं के नियमों में बदलाव किए जाएंगे। विशेषज्ञों की मदद से परीक्षा केन्द्रों और छात्रों के लिए दिशा-निर्देश तैयार किए जा रहे हैं। इंजीनियरिंग और मेडिकल कोर्सेज में प्रवेश के लिए होने वाली इन परीक्षाओं में इस साल लगभग 24 लाख छात्रों ने आवेदन किया है। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी पहले ही जेईई मेन्स परीक्षा के एडमिट कार्ड जारी कर चुकी है। बता दें कि जेईई मेन्स परीक्षा 1 सितंबर से 6 सितंबर तक चलेंगी, जबकि नीट परीक्षा 13 सितंबर को आयोजित होगी।

2 कर्नाटक में खुलेंगे नए शिक्षण संस्थान

कर्नाटक सरकार ने ऐलान किया है कि वह अगले तीन सालों में राज्य में 16 विश्वविद्यालय और 34 स्वायत्त शिक्षण संस्थान खोलेगी। इन 16 विश्वविद्यालयों में से छह अनुसंधान केन्द्रित विश्वविद्यालय होंगे, जबकि 10 अध्यापन केन्द्रित विश्वविद्यालय होंगे। राज्य सरकार ने यह फैसला, नई शिक्षा नीति को देखते हुए किया है। राज्य के उपमुख्यमंत्री व उच्च शिक्षा मंत्री सी. एन. अश्वत्थ नारायण ने प्रेस वार्ता में कहा, '2030 तक नई शिक्षा नीति के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए नए संस्थान स्थापित करने का उद्देश्य बनाया गया है।' मंत्री कहते हैं, 'राज्य में नई शिक्षा नीति को जल्दी लागू करने के लिए कानूनी संशोधन, प्रशासनिक सुधार और संसाधनों को संगठित करने की जरूरत पड़ेगी। उन्होंने इसे लेकर प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा मंत्री एस. सुरेश कुमार और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक भी की।

3 इंजीनियरिंग के साथ रचनात्मकता को बढ़ावा

आईआईटी खड़गपुर ने अपने छात्रों की रचनात्मक प्रतिभा को बढ़ावा देने के लिए एक अनोखी पहल की है। संस्थान ने 18 अगस्त 2020 को अपने परिसर में शास्त्रीय एवं लोक कला एकेडमी की शुरुआत की। अब छात्रों को इंजीनियरिंग के अलावा संगीत, ललित कलाओं और रंगकलाओं का प्रशिक्षण भी मिलेगा। इससे युवाओं में प्रयोग और नवाचार से जुड़े गुणों को विकसित करने में मदद मिलेगी। संस्थान के निदेशक वीके तिवारी के अनुसार, एक राष्ट्रीय स्तर के संस्थान के लिए अपने छात्रों, कर्मचारियों के संपूर्ण विकास पर ध्यान देना बेहद जरूरी है। गौरतलब है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रस्तावों के तहत इस एकेडमी का शुभारंभ हुआ है।

4 चयन-प्रक्रिया की ओर एक सुधारवादी कदम

फिलहाल अलग-अलग भर्ती एजेंसियों की फीस भरनी पड़ती है, और परीक्षा देने के लिए दूर-दूर तक जाना पड़ता है। कॉमन एलिजिबिटी टेस्ट के जरिये उम्मीदवार किसी भी या फिर सभी भर्ती परीक्षाओं में आवेदन कर सकेंगे और उन्हें सिर्फ एक बार परीक्षा में शामिल होना होगा। एक अधिकारी ने बताया कि कॉमन एन्ट्रेंस टेस्ट (सीईटी) की मेरिट लिस्ट तीन सालों तक मान्य रहेगी। इस दौरान उम्मीदवार अपनी क्षमता और पसंद के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों की नौकरियों के लिए आवेदन कर सकेंगे। प्रत्येक उम्मीदवार को अपने अंकों में सुधार के लिए दो और अवसर मिलेंगे, जिनमें से सबसे बेहतर स्कोर को माना जाएगा। नेशनल रिक्रूटमेंट एजेंसी (एनआरए), नेशनल एलिजिबिलिटी टेस्ट (सीईटी) का आयोजन करेगी, जिसके जरिये ग्रुप बी और सी (गैर-तकनीकी) पदों पर उम्मीदवारों का चयन होगा। शुरू में नेशनल रिक्रूटमेंट एजेंसी, रेल मंत्रालय, वित्त मंत्रालय, कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी), आरआरबी और आईबीपीएस का प्रतिनिधित्व करेगी।

5 नई शिक्षा नीति में बदलेंगे पढ़ाई के तौर-तरीके

नई शिक्षा नीति के अंतर्गत कोई भी विश्वविद्यालय 300 से अधिक कॉलेजों को मान्यता नहीं दे सकता। केन्द्रीय मंत्री के अनुसार, मान्यता देने की मौजूदा व्यवस्था को चरणबद्ध तरीके से हटाया जाएगा। नई शिक्षा नीति में मल्टिपल एंट्री और एग्जिट व्यवस्था को भी लाया गया है। इस व्यवस्था में चार साल के डिग्री कोर्स में छात्र को एक साल पढ़ाई करने पर सर्टिफिकेट, 2 साल के बाद डिप्लोमा और 3-4 साल के बाद डिग्री मिल सकेगी।

अभिषेक नागर

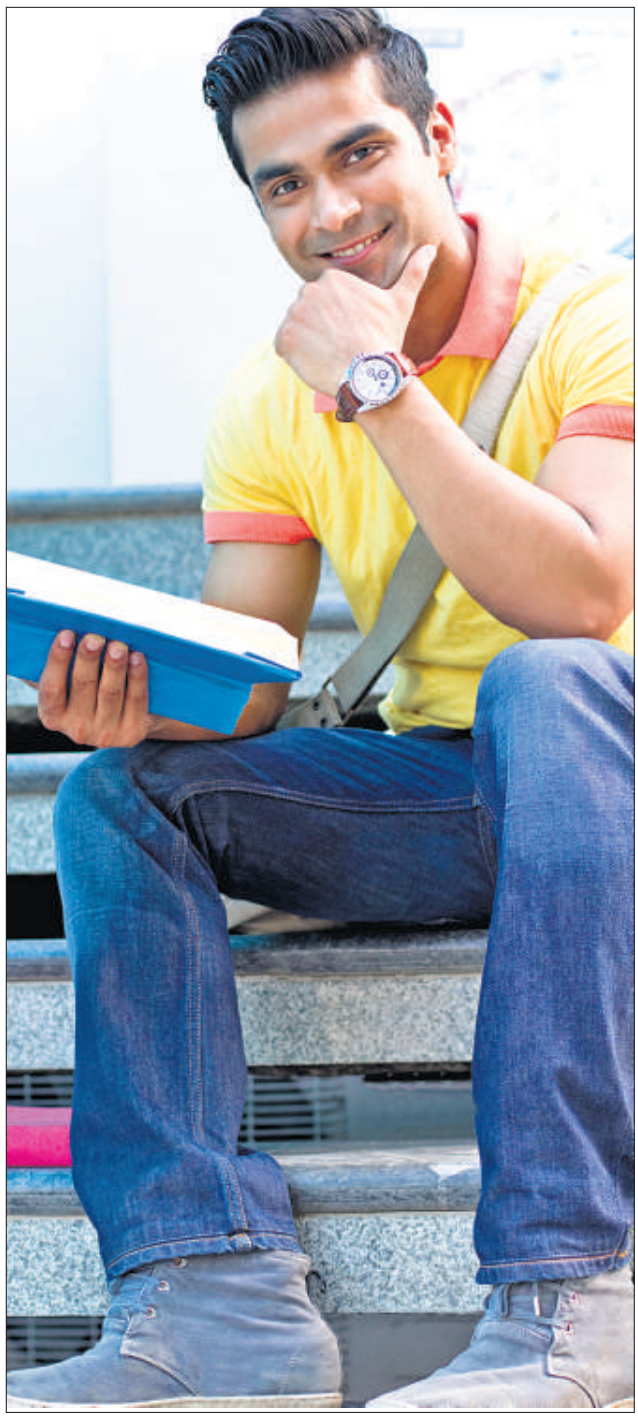

दिल्ली पुलिस कॉन्स्टेबल (पुरुष व महिला)

हर तरह की जानकारी से रहें अपडेट

कई ऐसे छात्र हैं, जिन्हें पुलिस में नौकरी कर समाजसेवा करने की चाह होती है। उन्हें तलाश है तो बस एक अच्छे अवसर की। अन्य राज्यों की तरह दिल्ली पुलिस में भी बड़े पैमाने पर कॉन्स्टेबलों (कार्यकारी) की भर्ती की जाती है। इसमें महिला कॉन्स्टेबलों की भर्ती भी होनी है। इनका काम मुख्यतः अपराध व अपराधियों का नेटवर्क ध्वस्त करना, महिलाओं की सुरक्षा, यातायात व्यवस्था सुचारु बनाना और लोगों को सुरक्षा का एहसास कराना है। परीक्षा का आयोजन कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी) द्वारा किया जाता है। आवेदन प्रक्रिया ऑनलाइन है और इसमें रिक्तियों की संख्या 5846 है। जबकि परीक्षा 27 नवम्बर से लेकर 14 दिसम्बर तक भिन्न-भिन्न तिथियों पर होगी। परीक्षा कंप्यूटर पर आधारित होगी।

बारहवीं के बाद आवेदन

इस परीक्षा में वही उम्मीदवार बैठ सकते हैं, जिन्होंने किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से 10+2 की परीक्षा अच्छे अंकों से पास कर ली हो। साथ ही उसके पास वैध ड्राइविंग लाइसेंस भी होना चाहिए। इसमें उम्मीदवारों की आयु-सीमा 18-25 वर्ष के बीच होनी चाहिए। आरक्षित श्रेणी को सरकारी नियमानुसार छूट दी जाएगी।

शारीरिक दक्षता परीक्षा

इसमें सामान्य व ओबीसी वर्ग के पुरुष उम्मीदवारों की ऊंचाई 170 सेमी, सीना 81 सेमी (फुलाने पर 85 सेमी) होना चाहिए। पहाड़ी इलाकों व स्टाफ को पांच-पांच सेमी की छूट मिलती है। इसी तरह से सामान्य व ओबीसी महिला उम्मीदवारों की ऊंचाई 157 सेमी, आरक्षित, पहाड़ी इलाके के उम्मीदवारों की 155 सेमी होनी चाहिए।

महत्वपूर्ण तिथियां

ऑनलाइन आवेदन की अं.ति.- 07 सितम्बर, 2020
परीक्षा की तिथि- 27 नवम्बर से 14 दिसंबर 2020

परीक्षा : एक नजर

सेक्शन	प्रश्न	अंक	समय
रीजनिंग	25	25	90 मिनट
जीके/करेंट अफेयर्स	50	50	-
न्यूमेरिकल एबिलिटी	15	15	-
कंप्यूटर फंडामेंटल	10	10	-
कुल	100 प्रश्न	100 अंक	90 मिनट

ऑनलाइन आवेदन या अधिक जानकारी के लिए निम्न वेबसाइट विजिट करें-
वेबसाइट - www.delhipolice.nic.in
www.ssconline.nic.in

ऑनलाइन परीक्षा में सावधानी

ऑनलाइन परीक्षा होने के कारण उम्मीदवारों को विशेष सावधानी बरतनी होगी। उन्हें प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़ने के बाद सेक्शन के हिसाब से उत्तर देना होगा। अंतिम बार सब्मिट करने से पहले उन्हें भलीभांति चेक जरूर करें। क्योंकि एक बार सब्मिट कर देने के बाद दोबारा बदलाव संभव नहीं है। बेहतर होगा कि इसका पूर्व में ही अभ्यास कर लें।

तैयारी के आवश्यक टिप्स

- दिमागी रूप से मजबूत बनने की कोशिश करें
- प्रमुख घटनाक्रमों को एक जगह नोट करते जाएं
- सटीक फार्मूले की रेगुलर प्रैक्टिस करें
- कनफ्यूजन की स्थिति तत्काल दूर करें
- ऑनलाइन मॉक टेस्ट देने का अभ्यास करें

चार सेक्शनों पर है दारोमदार

दिल्ली पुलिस में कॉन्स्टेबल के लिए कंप्यूटर आधारित यानी ऑनलाइन परीक्षा होगी। इस परीक्षा में कुल 100 प्रश्न पूछे जाएंगे और इसके लिए उम्मीदवारों को 90 मिनट का समय दिया जाएगा। प्रश्न चार सेक्शनों - रीजनिंग, जनरल नॉलेज एंड करेंट अफेयर्स, न्यूमेरिकल एबिलिटी व कम्प्यूटर फंडामेंटल से पूछे जाएंगे। प्रश्नों का स्वरूप बहुविकल्पीय होगा और उनके एक-एक अंक निर्धारित होंगे। गलत उत्तर दिए जाने पर एक चौथाई अंक काट लिए जाएंगे।

आधारभूत सिद्धांतों को समझें

रीजनिंग में 25 प्रश्न पूछे जाते हैं। इसकी तैयारी के लिए अभ्यर्थी को अपने सोचने-समझने की शक्ति तथा नजरिए को बदलना होगा। इसमें पूछे जाने वाले प्रश्न काफी घुमावदार एवं दिमागी होते हैं। इनका उद्देश्य अभ्यर्थी की मानसिक योग्यता को परखना होता है। तैयारी के दौरान यह ध्यान रखें कि उनके आधारभूत सिद्धांत न छूटने पाएं। क्योंकि इस विषय को रट्टा मारकर नहीं पढ़ा जा सकता है। क्या, क्यों और कैसे वाले प्रश्नों को समझना भी जरूरी है।

अपडेट जानकारी मांगता है जीके

सामान्य ज्ञान और करेंट अफेयर्स में प्रश्नों की संख्या 50 होती है। इस खंड में देश-दुनिया से लेकर अभ्यर्थी के आसपास के वातावरण पर प्रश्न पूछे जाते हैं। इसके लिए छात्रों को अपनी जानकारी हमेशा अपडेट रखनी होगी तथा प्रतिदिन के हलचलों पर नजर रखनी होगी। ये प्रश्न इतिहास, भूगोल, राजनीति, खेल, साहित्य तथा आर्थिक जगत से जुड़े हो सकते हैं। इसके लिए प्रतिदिन समाचार पत्र-पत्रिकाओं के संपर्क में रहें तथा न्यूज चैनलों पर भी नजर दौड़ाते रहें।

सूत्रों व फॉर्मूलों का अभ्यास करें

न्यूमेरिकल एबिलिटी के प्रश्न दसवीं स्तर के होते हैं तथा इसमें पूछे गए प्रश्न सूत्र अथवा फॉर्मूले पर आधारित होते हैं। ये प्रश्न समय-दूरी, प्रतिशत, लघुत्तम एवं महत्तम समावर्तक, नंबर सिस्टम, त्रिकोणमिति तथा सांख्यिकी आदि पर पूछे जाते हैं। इसकी तैयारी अभ्यास की तीव्रता पर निर्भर करती है। बिना परिश्रम के अभ्यर्थी को इस खण्ड में सफलता की उम्मीद करना बेमानी है। इसमें प्रश्नों की संख्या 15 होती है।

कंप्यूटर की बेसिक समझ जरूरी

इस परीक्षा में 10 अंकों का एक कम्प्यूटर का सेक्शन भी शामिल है। इसमें सफलता हासिल करने के लिए उम्मीदवारों को हार्डवेयर व सॉफ्टवेयर, दोनों की आधारभूत जानकारी होनी चाहिए। प्रश्न कम्प्यूटर की आधारभूत जानकारी मसलन- एमएस वर्ड, एक्सल, पावर पॉइंट, इंटरनेट आदि से पूछे जाते हैं।

प्रस्तुति : संजीव कुमार सिंह

रट कर नहीं प्रैक्टिकल होकर मिलेगी कामयाबी

रॉबर्ट कियोसाकी की एक पुस्तक है 'रिच डैड, पुअर डैड' अर्थात 'अमीर पापा, गरीब पापा'। इसमें दोनों तरह के पिताओं का अंतर बताया गया है और वे कारण भी, जिससे अमीर पिता का बेटा अमीर और गरीब पिता का बेटा गरीब ही बनता चला जाता है। पर यह सब कुछ आपकी सोच और उस सीख पर निर्भर करता है, जो आप सीखते हैं और आगे भी सिखाते हैं। सामान्यतः होता यह है कि एक सामान्य परिवार वाले गरीब पिता अपने बच्चे के पीछे पड़े रहते हैं कि बेटा खूब मन लगा कर पढ़ो, मेरिट में आ जाओ, जिससे सरकारी नौकरी लग जाए। मसलन उसकी सोचने-समझने की उम्र से ही उसके दिमाग में आपका दिमाग घुस जाता है, वह आपके बताए हुए नक्शे-कदम पर चलने लगता है और कभी अपने दिमाग का उपयोग ही नहीं कर पाता। अर्थात आप उसे उसके अनुभव को स्वयं पाने और जानने देना ही नहीं चाहते, सिर्फ किताबी कीड़ा बना कर रख देना चाहते हैं। तो भला वह दुनियादारी की चीजें कैसे सीखेगा। इसके बनिस्पत संपन्न पिताओं की कहानी ठीक इसके उलट है। ये पिता स्वयं तो जीवन में जोखिम उठाते ही हैं, बच्चों को भी जोखिम उठाने में मदद करते हैं। हमेशा कुछ नया करने की सीख देते हैं। अपने बच्चों को परंपरागत विषय न पढ़ा कर ऐसे विषय पढ़ने पर जोर देते हैं, जो नए हों और समयानुकूल हों, जैसे फाइनेंस, मार्केटिंग, रिस्क मैनेजमेंट, उद्यमिता आदि। मतलब ऐसे विषयों पर जोर देते हैं, जिससे बच्चे को प्रायोगिक ज्ञान अधिक मिले, बनिस्बत सैद्धांतिक ज्ञान के। 'अमीर पापा, गरीब पापा' में ऐसे ही कुछ अंतरों को कुछ उदाहरणों से इस प्रकार समझा जा सकता है–

नफा-नुकसान

यदि कोई स्टूडेंट फाइनेंस पढ़ता है तो उसे बाजार की उस लाभ-हानि का पता चल जाता है, जो एक बैंक द्वारा उसे प्रदान की जाती है। लेकिन जिसका फाइनेंस जैसे विषयों से दूर-दूर तक नाता नहीं होता, वह इस चीज को नहीं समझ पाता। प्रायः सामान्य मध्य वर्ग और गरीब वर्ग से आने वाले व्यक्तियों की समस्या यह होती है कि वे अपने जीवन का आधा हिस्सा करियर बनाने में निकाल देते हैं और बचा हुआ आधा हिस्सा उस ऋण अथवा लोन को चुकाने में गुजार देते है, जो उन्होंने बैंक से लिया हुआ होता है। इस बात को इस प्रकार से समझा जा सकता है कि दिल्ली जैसे शहर में एक अदद घर की चाह में हम किसी बैंक से कर्ज लेते हैं।

मान लीजिये आपके कर्ज की रकम 20 लाख रुपये है और आपने 20 वर्षों के लिए यह लोन लिया तो आप जिंदगी के अगले बीस वर्षों तक इस लोन को चुकाने के लिए दिन-रात मेहनत करते रहेंगे। इस 20 लाख के बदले आपको मूल धनराशि के 10 प्रतिशत ब्याज सहित अगले 20 वर्षों में कम से कम 30 लाख की रकम चुकानी होगी।

बाजार के ट्रेंड क्या हैं

इसी तरह यदि आप उद्यमिता जैसे विषय को पढ़ते हैं तो आपको यह पता चल जाएगा कि बाजार में क्या चल रहा है। साथ ही आपको पढ़ाई के दौरान जो क्षेत्र का ज्ञान मिला है, वह भी आपके काम आएगा, जबकि एक छात्र जिसने किताबों का सिर्फ रट्टा मार कर ही परीक्षा पास की है, उसे इन चीजों का ज्ञान नहीं होगा। इसीलिए कहा जाता है कि प्रायोगिक ज्ञान सैद्धांतिक ज्ञान से हमेशा बेहतर होता है। इसको इस बात से भी समझा जा सकता है-मान लीजिये आपने 20 लाख का लोन, जिसे आपने असेट समझ कर लिया था, दरअसल वह असेट न होकर लाइबिलिटी थी, जिसे आपको हर हालत में चुकाना ही पड़ेगा। प्रायः होता यह है कि एक मध्य-वर्ग का व्यक्ति बिना सोचे-समझे महज 2 लाख का इनकम टैक्स बचाने के लिए इतना बड़ा कर्ज लेता है, जो उससे कई गुना महंगा पड़ता है।

वह नहीं जानता कि इसी पैसे को यदि दूसरी कई जगहों पर निवेश करता तो उसको फायदा भी मिलता और इनकम टैक्स भी नहीं देना पड़ता। आज बाजार में कई ऐसे शेयर्स हैं, म्यूचुअल फंड्स हैं, एफडी हैं, जिनमें निवेश करने से इनकम टैक्स में छूट तो मिलेगी ही, साथ ही आपके 20 लाख रुपये अगले पांच साल में 30 लाख भी बन सकते हैं। इसलिए कोई भी निवेश करने से पहले जानिये कि कहां पैसा लगाने में आपको फायदा होगा। इसी को निवेश की भाषा में कहा जाता है कि 'आपका पैसा आपके लिए काम करता है या नहीं'।

कुछ नया करें

मध्य वर्ग और गरीब वर्ग के अधिकतर बच्चों को यह पता ही नहीं चलता कि बाजार में नया क्या चल रहा है। किस क्षेत्र की और विषयों की अधिक मांग है। जब तक उन्हें उन विषयों का पता चलता है, तब तक चीजें पीछे छूट जाती हैं। यह बात बिल्कुल वैसे ही है, जैसे एक सामान्य आदमी बहुत दिनों तक इस बात का इंतजार करता है कि पहले मार्केट स्थिर हो जाए, फिर निवेश करेंगे। उन्हें यह नहीं पता होता कि हवा का रुख देख कर निवेश करने वाले लोग हमेशा घाटे में रहते हैं, क्योंकि तब तक जो चीज बाजार में लॉन्च की जाती है, वह स्थिरता की सिचुएशन में पहुंच जाती है। जबकि निवेश और तरक्की का फंडा यह कहता है कि जब कोई भी चीज बाजार में नई आए अथवा और जब वह वृद्धि की अवस्था में हो, तब उस पर हाथ आजमाना हमेशा फायदेमंद होता है, न कि उसकी चरम अवस्था पर।

फीचर टीम

नई राह बना रही
सोशल मीडिया मार्केटिंग

इंटरनेट अब आपकी जेब में है। किशोर से लेकर बुजुर्ग तक, हर कोई सोशल मीडिया पर सक्रिय है। एक ओर जहां ऑनलाइन खरीदारी का चलन बढ़ा है, वहीं कंपनियां सोशल साइट्स के जरिये मार्केटिंग के नए-नए तरीके खोज रही हैं। यह काम कर रहे हैं सोशल मीडिया मैनेजर्स, जिनकी मांग कॉरपोरेट जगत में बढ़ रही है।

सोशल मीडिया मार्केटिंग इन दिनों करियर के नए विकल्पों में से एक बन कर उभरी है। इस क्षेत्र में तरक्की करने की असीम संभावनाएं हैं। इसके दो कारण हैं। पहला तो यह कि भारत में इस समय 69 करोड़ इंटरनेट उपभोक्ता हैं और दूसरा ये कि भविष्य में इनकी संख्या करीब दस गुना तक बढ़ने की उम्मीद जताई जा रही है। सस्ते स्मार्टफोन आने से तमाम मल्टीनेशनल कंपनियां इस नए ट्रेंड को अनदेखा नहीं कर सकतीं। बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि अगर किसी कंपनी को टिके रहना है तो उसे इस नए डिजिटल माध्यम द्वारा ग्राहकों की जेब से पैसा निकालना होगा। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और न जाने कितनी सोशल साइट्स बजरिये मोबाइल आपकी जेब में हैं। सोशल साइट्स की उपयोगिता को दुनिया की तमाम बड़ी कंपनियां पहले ही भांप गई थीं। यही कारण है कि इन पर अपनी कंपनी या उत्पादों का प्रचार करना उन्होंने कुछ साल पहले से ही आरंभ कर दिया है।

क्या है सोशल मीडिया मार्केटिंग

सोशल मीडिया मार्केटिंग तमाम सोशल साइट्स के जरिये किसी कंपनी या उसके उत्पाद की मार्केटिंग का काम है। इसके जरिये कुछ लोग या टीम, किसी खास वस्तु को सोशल साइट्स पर लोकप्रिय बना देते हैं, जिससे उसकी बिक्री में बढ़ोतरी होती है। इसमें सबसे अधिक वे सोशल साइट्स लाभदायक हैं, जिन पर ज्यादा 'ट्रैफिक' आता है। 'ट्रैफिक' यानी उस साइट पर निरंतर आने-जाने वाले लोग। अगर आप भी फेसबुक यूजर हैं तो आपने इस तरह के कई विज्ञापन देखे होंगे। पर सोशल मीडिया मार्केटिंग इन विज्ञापनों से कुछ अलग काम है। इसमें सीधे तौर पर मार्केटिंग करने की बजाय किसी मुहिम के तहत ब्रांडिंग की जाती है।

कंपनियों को मिलता है फायदा

सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स किसी भी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति या ग्रुप या कंपनी से सीधे बातचीत का मौका देती हैं। ऐसे में जब कोई कंपनी सोशल साइट पर आती है तो लोग उससे जुड़ी शंकाओं को सीधे तौर पर पोस्ट कर सकते हैं। यही कारण है कि सोशल साइट पर उत्पाद को लोकप्रिय होते समय नहीं लगता। उदाहरण के लिए ट्विटर पर 'री-ट्वीट' और 'री-पोस्ट' के विकल्प किसी भी ग्राहक को वृहद नजरिए से उत्पाद को जांचने का और उसे पसंद या नापसंद करने का मौका देते हैं। इससे लोगों की संख्या में इजाफा होता है और कई जानकारियों का भी आदान-प्रदान होता है। यह मार्केटिंग के दूसरे तरीकों से काफी कारगर है। चूंकि हर व्यक्ति को कंपनी खुद जवाब देती है, इसलिए ग्राहक की कंपनी के प्रति विश्वसनीयता भी बढ़ती है।

लोकप्रियता बढ़ाने का तरीका

इस मार्केटिंग में सिर्फ उत्पादों की लोकप्रियता बढ़ाना ही मकसद नहीं, बल्कि कई अलग नजरियों से भी लोग इसका इस्तेमाल कर रहे हैं। उदाहरण के लिए 2008 के अमेरिकी राष्ट्रपति के चुनाव में बराक ओबामा ने ट्विटर और फेसबुक का जम कर इस्तेमाल किया था और इससे उनकी लोकप्रियता में काफी इजाफा हुआ था।

कुछ जरूरी बातें

- महत्वपूर्ण जॉब पोर्टल्स और सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर अपना प्रोफाइल बनाएं।
- अपने रेज्यूमे में की-वर्ड्स और स्किल्स को हाईलाइट करें।
- अपने प्रोफाइल पर गलत जानकारी न दें।
- गलत पोस्ट करने से बचें।
- पोस्ट में बेहतर कम्युनिकेशन स्किल का खयाल जरूर रखें।
- अच्छे संस्थानों की वेबसाइट के करियर सेक्शन से अपडेट रहें।
- गूगल सर्च में अपना नाम टाइप करें। फेसबुक, ट्विटर प्रोफाइल के रिजल्ट दिखेंगे। गलत जानकारी हो उसे सुधारें।

नौकरी और सोशल साइट्स

49 % बेहतर गुणवत्ता वाले कर्मचारी मिले सोशल मीडिया के जरिये नौकरी देने वालों को

29 % जॉब की तलाश करने वाले लोग सोशल मीडिया पर नौकरी खोजते हैं।

30 % जॉब से संबंधित जानकारी गूगल सर्च के जरिये खोजी जाती है।

- ब्रान्डिंग करने के लिए कंपनियां फेसबुक पर अपना पेज बनाती हैं। संस्थान से जुड़े लोग जॉब इन्वाइट्स भेज कर बहुत से कुशल लोगों तक इन अवसरों की जानकारियां पहुंचाते हैं और उनमें से योग्यतम का चुनाव कर अपने यहां जॉब देते हैं।
- ट्विटर भले ही कुछ दिनों पहले तक 140 कैरेक्टर तक सीमित रहा हो, पर इसके उपभोक्ता बड़ी संख्या में मौजूद हैं। कंपनियां ट्वीट्स के माध्यम से बड़ी संख्या में एप्लिकेंट्स जुटाती हैं और फॉलोअर्स को अपनी रिक्रूटमेंट साइट्स के लिए लिंक उपलब्ध कराती हैं।
- नौकरी की तलाश कर रहे युवाओं के लिए लिंक्डइन एक बेहतर प्रोफेशनल सोशल वेबसाइट है। नौकरी देने के लिए नियोक्ता इस साइट का धड़ल्ले से उपयोग करते हैं और रोजगार तलाश रहे युवा भी अब इस साइट पर अपना प्रोफाइल जरूर बनाते हैं।

समय-समय पर उनके सोशल नेटवर्किंग प्रोफाइल पेजों को अपडेट किया गया और वे लोगों से सीधे जुड़े रहे। इसी का इस्तेमाल पिछले आम चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी किया था, जिससे सोशल साइट्स पर उनकी लोकप्रियता बढ़ी थी।

कहां-कहां होती है जरूरत

ट्विटर : ट्विटर कंपनियों को अपने उत्पादों को प्रमोट करने के लिए 140 कैरेक्टर की सीमा देता है, जिसमें छोटा ट्वीट लिखा होता है। यह ट्वीट सीधे तौर पर उस उत्पाद की वेबसाइट, फेसबुक प्रोफाइल, फोटो, वीडियो आदि से जुड़ा होता है। हालांकि ट्विटर ने अब शब्द-सीमा बढ़ा कर अधिकतम 1000 कैरेक्टर कर दी है।

यू-ट्यूब : इसमें कंपनियां अपने उत्पाद को वीडियो की सहायता से ग्राहकों तक पहुंचाती हैं। उदाहरण के लिए अगर किसी ने कुत्ते की ट्रेनिंग पर शोध किया है तो यह संभव है कि उसे यहां ऐसा वीडियो भी मिल जाए। भारत में हर माह आठ करोड़ लोग यू-ट्यूब पर जाते हैं।

फेसबुक : इसमें किसी भी उत्पाद का वीडियो, फोटो या लंबी सी व्याख्या आदि पोस्ट की जा सकती है। यह सीधे तौर पर ट्विटर से लिंक होता है।

गूगल प्लस : यहां उत्पाद के साथ गूगल सर्च इंजन का विकल्प भी होता है, जिससे ग्राहक उसके बारे में और जानकारियां सर्च कर सके।

लिंक्डइन : यह कंपनियों को प्रोफेशनल प्रोफाइल बनाने की इजाजत देता है। इसमें भी ट्विटर आदि का लिंक अटैच होता है।

इंस्टाग्राम : इंस्टाग्राम के 2 करोड़ से अधिक उपयोगकर्ता थे। इंस्टाग्राम कंपनियों को मौका देता है कि वो लोगों से सीधे तौर पर जुड़ सकें और अपनी बात भी रख सकें।

टंबलर : यह कंपनी को ब्लॉग बनाने को कहता है, जिसके जरिये ग्राहक उससे खुद संपर्क कर सके।

क्या करना होता है काम

इसमें मुख्य तौर पर दो तरह के काम करने होते हैं- प्रमोशन और मॉनिटरिंग। प्रमोशन के तहत सोशल मीडिया के माध्यम से ब्रांड के प्रति लोगों में जागरूकता और बिक्री बढ़ाना, नए उत्पादों का लॉन्च, री-लॉन्च आदि सब सम्मिलित होता है। मॉनिटरिंग में यह समझना होता है कि लोग ब्रांड को कैसे ले रहे हैं और रिस्पॉन्स क्या मिल रहा है। जब आप इस काम की शुरुआत करते हैं या नई नौकरी जॉइन करते हैं तो आपसे इन कामों की उम्मीद होती है-

- प्लानिंग में सहयोग देना।
- एक्टिव होकर लोगों को रिस्पॉन्स करना।
- नए ट्रेंडस को जान कर उस तरह से काम करना। आने वाले प्रोजेक्ट्स में नए ट्रेंड्स का ध्यान रखना।
- इसके अलावा डिजाइन या डेवलपर के तौर पर भी काम कर सकते हैं। नए प्रोजेक्ट को यही लोग डिजाइन करते हैं।

किन्हें मिलती है वरीयता

इस इंडस्ट्री से जुड़े लोग कहते हैं कि वे ऐसे लोगों की तलाश में रहते हैं, जो सोशल मीडिया को अच्छी तरह समझते हों और लोगों से एक दिलचस्प अंदाज में संवाद करना भी जानते हों। इसके लिए आवश्यक नहीं कि आप मार्केटिंग बैकग्राउंड से ही हों। इसमें आपको सोशल मीडिया मार्केटिंग मैनेजर, इमर्जिंग मीडिया एंड कंटेंट मैनेजर, सोशल नेटवर्किंग एंड कम्युनिटीज मैनेजर, सोशल मीडिया मैनेजर जैसी कोई भी पोस्ट आसानी से मिल सकती है।

फीचर टीम